महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा की पी.एच.डी (हिन्दी)

उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध प्रबंध

P/Th 10872

शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण

की

संक्षिप्त रूप-रेखा

P/Th 10872

प्रस्तोत्री
मीनू शर्मा
एम.ए., एम.फिल.

F.W.CS
A.M.Dalal
7/4/04

DR. (MISS) ANURADHA DALAL
HEAD, DEPT OF HINDI
FACULTY OF ARTS
M. S UNIVERSITY OF BARODA
VADODARA

F.W.CS.
07-04-2004

निर्देशक
डॉ. ओ.पी. यादव
हिन्दी विभाग,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा.

शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण

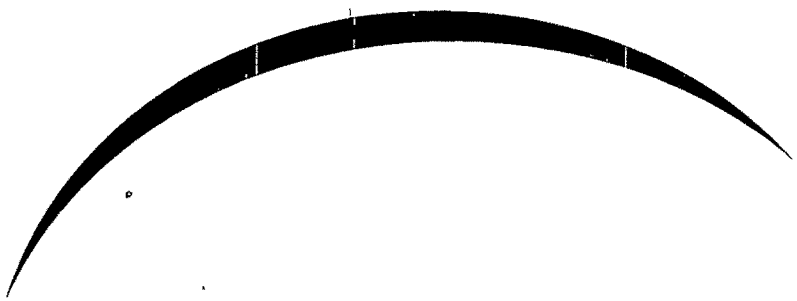

विषयानुक्रम

प्रथम अध्याय : *जीवन तथा रचनाओं का संक्षिप्त परिचय जन्म, शिक्षा-दीक्षा, साहित्यिक विकास, कृतित्व।*

द्वितीय अध्याय : *पूर्ववर्ती उपन्यासों में नारी चित्रण प्रेमचन्द पूर्व युग, प्रेमचन्द युग, प्रेमचन्दोत्तर युग।*

तृतीय अध्याय : *युगीन परिप्रेक्ष्य में नारी जीवन की समस्यायें। महिलाओं के कामकाजी होने के कारण, नारी जीवन की समस्याएं।*

चतुर्थ अध्याय : *शिवानी के उपन्यासों में नारी चित्रण पात्र-परिभाषा एवं महत्व, पात्रों का वर्गीकरण, नारी चित्रण, विशेष रूपों में नारी चित्रण।*

पंचम अध्याय : *शिवानी की समकालीन उपन्यास लेखिकाऐं। उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, ममता कालिया, निरूपमा सोबती, राजी सेठ, मालती जोशी, मेहरून्निसा परवेज, शशिप्रभा शास्त्री, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग।*

षष्ठम् अध्याय : *शिवानी के उपन्यासों में भाषा शैली।*
भाषा, भाषा का स्वरूप, शब्द संपदा, अन्य भाषा तथा बोलियों के शब्द, उपमान, रूपक, विशेषण, क्रिया, मुहावरे, प्रतीक, शैली।

उपसंहार : *मूल्यांकन।*
परिशिष्ट

विवेच्य विषय की प्रस्तुति

शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण का लेखांकन मेरे शोध-प्रबंध का लक्ष्य रहा है। जिसके मद्देनजर विषय के विभिन्न आयामों का विवेचन-विश्लेषण करने के निमित्त जो रूप-रेखा बनी उसे सात अध्यायों में सम्मिलित किया गया है।

प्रथम अध्याय में शिवानी जी के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला गया है। उनकी शिक्षा-दीक्षा कहा पर हुई उनका पारिवारिक जीवन किस तरह का था। किस प्रकार शिवानी ने अपने सभी कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए लेखनी को भी जारी रखा।

साहित्यिक विकास के अन्तर्गत उनकी कृतियों का वर्णन किया है। जिसमें उनके उपन्यास, कहानी, संस्मरण एवं रेखाचित्र, बालसाहित्य को लिया गया है ।

द्वितीय अध्याय में पूर्ववर्ती उपन्यासों में प्रस्तुत नारी चित्रण को लिया गया है क्योंकि साठ के दशक के उपन्यासों में जो नारी चरित्र उभरा है, उसके सही मूल्यांकन के लिए पूर्ववर्ती परम्परा का विहंगावलोकन किया जाना आवश्यक है। इसमें प्रेमचन्द पूर्व युग के उपन्यासों में नारी-जीवन का चित्रण का वर्णन किया है। इस काल में हिन्दी उपन्यास का वास्तविक विकास नहीं हुआ था।

नारी पात्र भी जीवन्त न होकर कठपुतलीनुमा लगते हैं।

प्रेमचन्द तथा प्रेमचन्द युग के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण किया है। हिन्दी उपन्यासों को वास्तविक गौरव प्रेमचन्द द्वारा ही प्राप्त हुआ है। प्रेमचन्द के उपन्यासों के नारी पात्र बदलते जमाने के अनुसार है। प्रेमचन्द युग के अन्य उपन्यासकारों के उपन्यासों में आये नारी चरित्र का भी संक्षिप्त रूप में वर्णन किया गया है। प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यासों में नारी जीवन के चित्रण में जो बदलाव आया है। उसे दिखाया गया है। महिलाओं ने वाणी व्यवहार सोच-समझदारी तथा नारी चेतना की दृष्टि से एक निश्चित यात्रा अवश्य तय की है।

'तृतीय अध्याय' के अन्तर्गत युगीन परिप्रेक्ष्य मे जो नारी के जीवन में समस्याएं हैं उन्हें दर्शाया गया है। ये समस्याएं किन कारणों से उत्पन्न होती है उन्हें दर्शाया गया है। शिवानी जी के युग में जो समस्यायें थी उसे उन्होंने अपने उपन्यासों में दिखाने का प्रयास किया है।

इन समस्याओं के कारण नारी कितनी कष्टमय स्थितियों से गुजर रही है यह दिखाने का प्रयत्न इस अध्याय में किया है।

'चतुर्थ अध्याय' के अन्तर्गत पात्र की परिभाषा एवं महत्व पर प्रकाश डाला गया है। फिर विभिन्न प्रकार के पात्रों का वर्गीकरण किया है। शिवानी जी के उपन्यासों में नारी चित्रण को कुछ विशेष रूपों में उभारा है उन्हीं विशेष पात्रों का वर्णन इसमें किया गया है।

'पंचम अध्याय' इस अध्याय में शिवानी की समकालीन उपन्यास लेखिकाओं का संक्षिप्त जीवन परिचय तथा उनके उपन्यासों में वर्णित नारी

जीवन का चित्रण दिखाया गया है। साठोत्तर महिला लेखन के दौर में लेखिकाओं ने स्त्री को लेकर नई चेतना के निर्माण की पहल की जो हमें इनके उपन्यासों में देखने को मिलती है।

'षष्ठम् अध्याय' के अन्तर्गत शिवानी के उपन्यासों में प्रयुक्त की गई भाषा शैली का वर्णन किया है। भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, भाषा का स्वरूप, शब्द सम्पदा। शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में नये उपमान, रूपक विशेषण, क्रियाओं के नये रूप आदि को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। इनके कारण उनकी भाषा में नवीन अभिव्यंजना की सृष्टि होती है। शैली के गुण तथा शिवानी के उपन्यासों में विभिन्न शैलियों का वर्गीकरण स्पष्ट किया है। शैलियों के वर्गीकरण के अन्तर्गत उन्हें सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

आभार

मुझे शुरु से ही अच्छा साहित्य पढ़ने का शौक रहा है। स्नातकोत्तर शिक्षाग्रहण कर लेने के पश्चात् मुझे मेरी अभिरुचि के अनुकूल वातावरण मिला। एम.फिल. करने के पश्चात् मेरे अन्दर और अधिक आत्मविश्वास आ गया और मुझे लगा मैं शिवानी जी के उपन्यासों पर शोध कार्य कर सकती हूँ। प्रथम परिचय के दौरान मैंने अपनी रुचि डॉ. ओ.पी. यादव को बताई। शोध-प्रबन्ध के विषय का चयन और पल्लवन इन्हीं की सत्प्रेरणा से फलीभूत हुआ। विषय अत्यन्त रुचिकर था और आधारभूत सामग्री की विरलता के कारण कठिन भी, परन्तु उनके कुशल निर्देशन में समस्त बाधाएं सहजता से दूर हो गई। आदरणीय डॉ. प्रेमलता बाफना के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन किये बिना नहीं रह सकती। अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी उन्होंने समय समय पर उचित दिशा-निर्देश दिये हैं। उनके आत्मीय अनुग्रह के प्रति मैं श्रद्धानत हूँ। हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ. अनुराधा दलाल, डॉ. इन्दु शुक्ला, डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी और प्रो. पारुकांत देसाई जी के द्वारा भी मुझे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त होता रहा है। अतः उनके प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय लायब्रेरी के प्रति भी तथा वहाँ के सभी कर्मचारियों का भी मुझे बराबर सहयोग मिलता रहा जिसके लिए मैं तहे दिल से इन सभी की आभारी हूँ। मेरे पति श्री एस.आर. शर्मा जिन्होंने मेरा इस शोध कार्य में पूरा साथ दिया हैं मैं उनका भी आभार व्यक्त करती हूँ। मेरी स्नेहिल सासू माँ ने भी मुझे इस कार्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयाग दिया है। मेरी दोनों बड़ी बहनों दीपा एवम् शैलजा जिनकी वजह से मैंने पी-एच.डी. से पहले की पढ़ाई की और यहाँ तक पहुँची अन्यथा मैं भी शायद और लड़कियों की तरह मात्र बी.ए. करके ही रह जाती। उन्होंने मुझे पिताजी के देहांत के बाद मेरी पढ़ाई में कभी रुकावट पैदा होने नहीं दी अतः मैं उनका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ।

साथ ही मैं राजस्थान विश्वविद्यालय के उन मनीषी विद्वानों का एवं वहाँ के कर्मचारियों का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरे इस शोध कार्य में मदद की एवं मुझे लायब्रेरी में पढ़ने की अनुमति दी।

अन्त में मैं यह सम्पूर्ण शोध कार्य मेरे स्व. पिता श्री दीनदयाल को समर्पित करती हूँ जिनकी सदैव यह आकांक्षा थी कि उनकी पुत्री पी-एच.डी. करे; उन्हीं की प्रेरणा और आशीर्वाद के परिणामस्वरूप ही मेरा यह शोध कार्य पूर्ण हो सका है। मैं उन्हें शतः शतः नमन करती हूँ।

मीनू शर्मा